International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 103-105

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 103-105
www.allresearchjournal.com
Received: 09-10-2015
Accepted: 11-11-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में सौंदर्य–चेतना

डॉ. शिवदत्त शर्मा

सौन्दर्य का जीवन में महत्व सर्वविदित है। भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य में सौन्दर्य साहित्य का अभिन्न अंग रहा है। यही कारण है कि आगे चलकर साहित्य में सौन्दर्य–शास्त्र की रचना हुई। सौंदर्य का सामान्य अर्थ रमणीय, सुन्दर, शोभा, कांति, चमत्कार आदि माना जाता है। अंग्रेजी में व्यूटि इसका ही पर्याय है। पाश्चात्य प्रसिद्ध आलोचक सुकरात के अनुसार जो नेत्र तथा श्रवण के माध्यम से प्रीतिकर हो, व सौंदर्य ही सुन्दर है। प्लेटो ने सौन्दर्य शब्द पर विस्तार से विवेचन किया है। उनके अनुसार–सौंदर्य सृष्टि का मूल है तथा इसका संधान करना तत्व दृष्टा का चरम लक्ष्य है। प्लेटो ने सौंदर्य को सत् के पर्याय के रूप में स्वीकार किया है। वे इसे श्रेयस् भी कहते हैं। परन्तु उनका विचार है कि सौन्दर्य केवल शरीर का गुण नहीं है, बल्कि सौंदर्य चेतना की सत्ता भी है। उन्होंने सौन्दर्य के चार स्तर स्वीकार किए हैं– शारीरिक सौन्दर्य, मानसिक सौन्दर्य, नैतिक सौंन्दर्य, और प्रज्ञात्मक सौंदर्य।

पाश्चात्य समीक्षकों में प्लोटिनस, कान्त, हीगल, आदि ने भी सौंदर्य की परिभाषाएं दी हैं। भारतीय साहित्य में वैदिक काल से ही सोन्दर्य चिन्तन की विशाल परम्परा रही है। संस्कृत साहित्य में माघ ने तो सौन्दर्य के महत्व को स्पष्ट करते हुए कहा है– सौंदर्य चिर नवीन है। वह प्रतिक्षण नवीनता को धारण करता रहता है। भारतीय काव्यशास्त्र में भी सौन्दर्य का पर्याप्त विवेचन है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि सौंदर्य स्वयं शोभा है, रमणीय है। लोकोत्तर होने के कारण वह आनन्द दायक है। भारतीय चिन्तक सौंन्दर्य के दोनों पक्षों आन्तरिक और बाह्य पर बल देता है। [1]

सत्यम् शिवम् और सुन्दरम् जीवन का आधार हैं। सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में इन तीनों ही तत्वों को उचित महत्व दिया गया है। उनमें भी पन्त सुन्दरम् के कवि माने जाते हैं। डॉ नगेन्द्र ने पन्त के बारे में लिखा हे– पन्त हिन्दी के प्राचीन ओर आधुनिक कवियों में एकमात्र सुन्दर के कवि हैं।

श्री विश्वम्भर मानव ने पन्त के व्यक्तित्व में ही सौंन्दर्य को देखने का प्रयास किया हे। वे लिखते हैं– जो व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धिऔर आत्मा से पूर्ण सुन्दर है उनका नाम पन्त है।

1 पन्त के सौन्दर्य का आधार

पन्त जी सौन्दर्य के कवि हैं। उन्होंने स्वयं लिखा हे कि– अपने काव्य जीवन पर दृष्टिपात करने पर मेरे भीतर यह बात स्पष्ट हो उठती है कि मेरे किशोर प्राण रूप कवि को बाहर लाने का श्रेय मेरी जन्म भूमि के उस नैसर्गिक सौन्दर्य को है, जिसकी गोद में पलकर मैं बडा हुआ हूं। प्रसाद की कविता पर बंगला तथा अंग्रेजी के कवियों की सौंदर्यानुभूति का पर्याप्त प्रभाव पडा है। कीट्स, रविन्द्रनाथ टैगोर, शैले आदि प्रमुख कवियों का प्रभाव पन्त की सौन्दर्य चेतना पर पडा है। सन् 1918 से 1955 तक पन्त जी ने वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, तथा युगान्त तक की काव्य रचनाएं की। इन रचनाओं में पन्त की सौन्दर्यानुभूति का क्रमिक विकास देखा जा सकता है। वीणा में संकलित सभी कविताओं में प्राकृतिक सौंन्दर्य के साथसाथ प्रकृति के प्रति सम्मोहन भाव भी देखा जा सकता है। पन्त ने लिखा है कि–पर्वत प्रदेश के उज्ज्वल, चंचल सौंदर्य ने मेरे जीवन के चारों ओर अपने नीरव सौंदर्य का जाल बुनना शुरु कर दिया था। कालान्तर में यही प्राकृतिक सौंदर्य आगे चलकर मानसिक तथा आत्मिक सौंदर्य में परिणत हो गया।वीणा से पल्लव तक अनेक कविताओं में प्राकृतिक सौन्दर्य देखने को मिलता है। गुंजन से युगान्त तक की कविताओं में मानवीय सौंदर्य तथा बाद की रचनाओं में आत्मिक सौंदर्य देखा जा सकता है। [2]

2 प्राकृतिक सौंन्दर्य

पन्त जी का काव्य संग्रह वीणा वास्तव में उनके प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति की अभिव्यक्ति है। कवि प्राकृतिक सौंदर्य से इतना प्रभावित है कि इस के सम्मुख मानवीय सौंदर्य उन्हें फीका नजर आता है इसी लिए पन्त एक तरह से मानवीय सौंदर्य की उपेक्षा करते प्रतीत होते हैं–

छोड द्रुमों की मधुर छाया,
तोड प्रकृति की भी माया।
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन। [3]

पन्त जी प्रकृति के चितेरे माने जाते हैं उन्होने प्रकृति के मनोमुग्धकारी चित्र अकिंत किए हैं। उनकी दृष्टि में प्रकृति निर्जीव नहीं, सजीव है। तथा चेतन प्राणियों के समान सभी क्रिया कलापों में संलग्न है। उनकी अनेक कविताओं में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है अनेकस्थलों पर नारी के रूप में प्रकृति को देखते हैं। पर्वत प्रदेश में पावस नामक कविता में वे लिखते हैं–

उड गया, अचानक, लो भूधर,
फडका अपार वारिद के पर
रव शेष रह गए हैं निर्झर
है टूट पडा भू पर अम्बर।

इसके अतिरिक्त चांदनी और छाया के भी अनेक चित्र उन्होंने खींचे हैं तथा उनको साकार रूप प्रदान किया है। संध्या, वर्षा, धूप आदि को सजीव बना कर नारी के रूप में उनके सौंदर्य का मनोहारी चित्रांकन पन्त जी ने किया है। उदाहरण के लिए संध्या का जो चित्र उन्होंने एक रूप–सुन्दरी के रूप में अंकित किया है, वह द्रष्टव्य है–

कहो, तुम रूपसि कौन
व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया छवि में आप
सुनहला फैला केश कलाप
मधुर, मंथर, मृदु मौन।

वीणा के बाद उनकी अभिव्यक्ति में और निखार दिखाई देता है। इसके उपरान्त पन्त रविन्द्रनाथ तथा कालिदास के प्रस्तुत विधानों से अधिक प्रभावित हुए। वीणा का किशोर कवि पल्लव तक आते आते एक युवा कवि बन गया हैं। पन्त के काव्य का शब्द चयन, शब्द शक्ति, तथा नएनए प्रयोगों में यौवन की मादक गन्ध झलकती प्रतीत होती है। कवि ने भी इसे स्वीकार किया है– प्रकृति–प्रेम तथा प्रकृति सौंदर्य की अभिव्यंजना पल्लव में अधिक प्रांजल तथा परिपक्व रूप में हुई है। [4] पल्लव छायावाद की एक सर्वश्रेष्ठ काव्यकृति मानी जाती हैं। यहां पहुंचकर कवि अन्तर्मुखी बन गया है। प्रसिद्ध कविता मौन–निमन्त्रण का एक उदाहरण देखिए–

स्तब्ध ज्योत्स्ना में जब संसार
चकित रहता शिशु–सा नादान
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान
न जाने, नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन।

3 मानवीय सौन्दर्य

प्रायःकवि मानवीय सौंदर्य का चित्रण बडी रमणीयता से करते हैं। पन्त जी भी इसका अपवाद नहीं हैं। उन्होंने नारी सौन्दर्य का चित्राण अधिक विशेषता से किया है। पन्त प्रकृति का भी चित्रण नारी के रूप में करते है। अन्य छायावादी कवियों से पन्त जी का नारी चित्रण भिन्न है तथा उनका दृष्टिकोण भी नवीन है। पन्त जी ने काव्य में नारी को देवी, मां, सहचरी, आदि अनेक रूपों में देखा है। नारी उनके लिए प्रेरणा स्त्रोत है। पन्त उन्हें गुणों का भण्डार कहते हैं। कवि को नारी का सौन्दर्य वासनात्मक नहीं बनता, बल्कि वह उसे जीवन में सत् प्रेरणा देता है। पल्लव में कवि नारी–सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है–

स्नेहमयि, सुन्दरतामयि, तुम्हारे रोम रोम से नारि।
मुझे है स्नेह अपार, तुम्हारा मृदु उर भी सुकुमारि
मुझे है स्वर्गागार, तुम्हारे बहें गुण हैं मेरे गान
मृदुल–दुर्बलता ध्यान, तुम्हारी पावना अभिमान
शक्ति, पूजनसम्मान, अकेली सुन्दरता कल्याणि
सकल ऐश्वर्यो की संधान । [5]

इसके अतिरिक्त पन्त जी ने नारी` सुकोमल तन का भी रमणीय चित्रण किया है। गुंजन नामक काव्य संग्रह में अप्सरा के रूप में नारी के मादक सौंदर्य का चित्रण किया गया है। उदाहरण देखिए–
एक वीणा की मृदु झंकार, कहां है सुन्दरता का पार।
तुम्हें किस दर्पण में सुकुमारि, दिखाउं मैं साकार।
तुम्हारे छूने में था प्राण, संग में पावन गंगा–स्नान,
तुम्हारी वाणी में कल्याणि, त्रिवेणी की लहरों का गान।
अपरिचित चितवन में था प्रात, सुधामय सांसों में उपचार,
तुम्हारी छाया में आधार सुखद चेंष्टाओं में आभार । [6]
बाह्य सौंदर्य के अतिरिक्त पन्त जी ने नारी के भावात्मक सौन्दर्य का भी सुन्दर चित्रण किया है।युगवाणी में कवि ने मुक्त कण्ठ से नारी की प्रशंसा की है तथा उसके हृदय को स्वर्ग सदृश माना है–

यदि स्वर्ग कहीं है पृथ्वी पर
ते वह नारी के उर के भीतर।
छल पर दल खोल हृदय के स्तर,
जब बिठलाती प्रसन्न होकर।
वह अमर प्रणय के शतदल पर।।

4 भावसौन्दर्य

भावसौन्दर्य का चित्रण भी उनकी कविता की विशेषता है। उन्होंने अमूर्त भावों को मूर्त रूप देने का सफल प्रयास किया है।
इस तरह कवि कभी प्रेम भाव का चित्रण करता है तो कभी वेदना भाव का, तथा इसका चित्रण करते हुए वह बडे संयम और संतोष से काम लेता है। संयोग के अतिरिक्त पन्त जी ने वियोग पक्ष का भी सफल चित्रण किया है। एक उदाहरण देखिए–

शून्य जीवन के अकेले पृष्ठ पर
विरह, आह कराहते इस शब्द को
किस कुलिस की तीक्ष्ण चुभती नोक ने
निठुर नियति ने अश्रुओं से है लिखा।

पन्त जी ने भावसौन्दर्य के अन्तर्गत स्मृतिभाव, संवेदना भाव, करुणाभाव, तथा शान्त भाव आदि का भी सुन्दर वर्णन किया है। परिवर्तन पन्त जी की दीर्घ भावप्रधान कविता है जिसमें सभी प्रकार के भाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं। एक भाव प्रधान कविता के इन अंशों में पाठक भावविह्वल हुए बिना नहीं रहता। कवि कहता है कि जिसका कल ही विवाह हुआ था और आज उसका सुहाग नष्ट हो गया। वह सुन्दर युवती एक वात् हत लतिका के समान निराधार पृथ्वी पर पडी है। [7] कवि का संवेदनासे ओतप्रोत भाव देखिए–

अभी तो मुकुट बंधा था माथ,
हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी चुंबन शून्य कपोल,
हाय,रुक गया यहीं संसार
बना सिंदूर अंगार,
वात हत लतिका वह सुकुमार
पडी है छिन्नाधार।

विरह भावना का वर्णन भी अत्यन्त स्वाभाविक है। परोक्ष रूप से अपने असफल प्रेम की कुण्ठा उनकी लेखनी में उतरती प्रतीत होती है। उदाहरण देखिए–

शैवालिनि, जाओ, मिलो तुम सिंधु से,
अनिल आलिंगन करो तुम गगन को
चन्द्रिके चूमों तरंगों के अधर
उडुगणों गाओ पवन वीणा बजाकर
पर हृदय, सब भांति तू कंगाल है,
उठ, किसी निर्जर विपिन में बैठकर
अश्रुओं की बाढ में अपनी बिकी
भग्नभावी को डुबा दे आंख–सी।

5 आध्यात्मिक–सौंदर्य

पन्त दार्शनिक दृष्टि से अरविन्द,स्वामी विवेकानन्द तथा भारतीय दर्शन से प्रभावित प्रतीत होते हैं। पन्त अध्यात्म और भौतिकता तथा मन और मस्तिष्क का समन्वय करके पूर्ण मानव विकास की संभावनाएं खोजते प्रतीत होते हैं। स्वर्णधूलि, स्वर्ण किरण, तथा उत्तरा कविताओं में आध्यात्मिक सौंदर्य के दर्शन होते हैं।कवि कहीं ब्रह्म का चित्रण करता है तो कहीं जीव का। कहीं कहीं कुछ पद्याशों में माया, तथा जीव के विषय में भी अपने उद्‌गार प्रस्तुत करता है। नौका विहार कविता में कवि उस निरन्तर और शाश्वत सत्ता की ओर भी संकेत करता है–

इस धारा सा ही जग का क्रम,शाश्वत इस जीवन का उद्‌गम,
शाश्वत् है गति, शाश्वत् संगम।
शाश्वत् नभ का नीला विकास, शाश्वत् शशि का यह रजत हास,
शाश्वत् लघु लहरों का विलास। [8]
मौन निमन्त्रण कविता में उस अज्ञात सत्ता की जिज्ञासा को देखा जा सकता है–
न जाने कौन, अये द्युतिमान,
जान मुझको अबोध, अज्ञान,
सुझाते हो तुम पथ अनजान
फूंक देते छिद्रों में गान,
अहे सुख–दुख के सहचर मौन,
नहीं कह सकता तुम हो कौन।

यही नहीं पन्त जी ने इसके साथ जीवात्मा का भी सुन्दर चित्रण किया है। पन्त जी धीरे धीरे आगे चलकर मनोवैज्ञानिक आध्यात्मवाद की ओर अग्रसर होने लगते हैं। इस स्थिति में पहुंचकर वे अन्तः चेतना के विकास पर बल देने लगते हैं। कवि आत्मा को शाश्वत् एवं चिरन्तन मानता है।

पन्त जी की यह सौन्दर्य चेतना उनके काव्य के कला पक्ष में भी देखी जा सकती है। खडी बोली के साहित्यिक रूप में आते ही पन्त जी की कविता ने उसमें रंग भर दिए। उन्होंने तत्समशब्द, अरबी, फारसी, ब, देशज, तथा अंग्रेजी भाषा के शब्दों का खुल कर प्रयोग किया। डॉ नगेन्द्र ने उचित ही कहा है कि पन्त जी ने सेस्कृत के अक्षय भण्डार में से पन्त जी ने रंगीन शब्दों को ही अधिक चुना है। चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, बिम्बात्मकता, आदि के प्रयोग के कारण उनका भाषा का सौंदर्य अत्यधिक बढ गया है। अलंकारों एवं छन्दों के प्रयोग में भी वे सिद्धहस्त थे। [9] डॉ नगेन्द्र ने उनके कलागत सौंदर्य के बारे में उचित ही कहा है– पल्लव की याचिका में पन्त ने भाषा, अलंकार, छन्द और भाव के सामंजस्य पर विचार व्यक्त किए हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि कवि भाषा में प्रयोग के सम्बन्ध में कितना जागरूक है। पन्त की शैली की प्रमुख विशेषताओं में–लाक्षणिक वैचित्र्य, विशेषण–विपर्यय, विरोध–चमत्कार, मानवीकरण, प्रतीक विधान, अन्योक्ति विधान प्रमुख हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि कवि पन्त सौ।दर्य के अनुपम कवि हैं तथा उन्होंने हिन्दी कविता को उन्नत शिखर तक पहुचाने का स्तुत्य प्रयास किया है।

सन्दर्भ सूचि

1. राम विलास शर्मा हिन्दी के छायावादी कवि पृ 75
2. सुमित्रानन्दन पन्त गुंजन
3. उपरोक्त वीणा
4. डॉ रामदरश राय छायावादी काव्य भाषा में अर्थतत्व पृ112
5. सुमित्रानन्दन पन्त पल्लव
6. उपरोक्त ग्रुजन
7. डॉ रामदरश राय आधुनिक हिन्दी कविता में पौराणिक सन्दर्भों की पुर्नरचनापृ176
8. सुमित्रानन्दन पन्त नौका विहार
9. डॉ मोहन अवस्थी हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहासपृ165